हिन्दी भाषा शिक्षण में कम्प्यूटर की उपयोगिता

संजीव कुमार
गांव इस्माईलाबाद (कुरुक्षेत्र)

शोध-पत्र सार : आज के इस वैज्ञानिक युग में हिन्दी भाषा शिक्षण में कम्प्यूटर का अति महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि किसी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उससे संबंधित सामग्री डिजिटल साधनों जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट पर अधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध हो। कम्प्यूटर एक सर्वाधिक विकसित, उपयोगी व बुद्धिमान यंत्र है। इसे 'इलैक्ट्रॉनिक मस्तिष्क' भी कह सकते हैं। वर्तमान में हिन्दी के विकास और वैश्विक प्रचार प्रसार में कम्प्यूटर की भूमिका अतुलय है। किसी भी भाषा के लिये उसके ज्ञान-विज्ञान को सुरक्षित रखने एवं पूरी दुनिया तक पहुँचाने के लिए उसका कम्प्यूटरीकरण अत्यन्त आवश्यक है। आज कम्प्यूटर और दूसरे ऐसे उपकरणों पर हिन्दी में काम करना उतना ही सहज है जितना किसी और भाषा में।

मुख्य शब्द :-कम्प्यूटर, शिक्षण, सर्वांगीण, वैश्विक, डिजिटल, इलैक्ट्रॉनिक, मस्तिष्क।

कम्प्यूटर और हिन्दी भाषा : हिन्दी भाषा के शिक्षण के लिए जब हमने परम्परा के साथ-साथ जब नवाचार को अपनाया तो कम्प्यूटर ने हिन्दी के शिक्षण को बहुत ज्यादा नए आयाम प्रदान किए। कम्प्यूटर जिसे हम हिन्दी में 'संगणक' कहते हैं। उसके आने के बाद से हिन्दी के विकास में कम्प्यूटर का योगदान और कम्प्यूटर के प्रसार में हिन्दी का योगदान अहम रहा है।

भाषाई कम्प्यूटिंग कम्प्यूटर विज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। आजके कम्प्यूटर युग में किसी भी भाषा का विकास कम्प्यूटरीकरण के बिना नहीं हो सकता। भाषाई कम्प्यूटिंग की दुनिया में प्रवेश से लेकर आज हिन्दी ने बहुत तरक्की की है। आधुनिक युग में सूचना और संप्रेषण तकनीकें परंपरागत तकनीकों की तरह एकांगी नहीं है। ये अपने आपमें विभिन्न हार्डवेयर तथा साफटवेयर, मीडिया तथा संप्रेषण प्रणालियों का समिश्रण है। इनमें से प्रमुख इस प्रकार है।

डिजीटल लाइब्ररियाँ तथा ऑनलाइन बुक्स, पर्सनल कम्प्यूटर, लैपटाप, मलटीमीडिया, नोट बुक तथा उन पर आधारित उपकरण तथा गतिविधियाँ।

कम्प्यूटर तथा सैटेलाइट कम्यूनीकेशन तकनीकी का ऐसा उपयोग है, जिनसे ई लर्निंग तथा ई-स्कूलिंग का सपना साकार किया जा सके। कम्प्यूटर से कई प्रोसेसिंग कार्यक्रम (जैसे माइक्रोसॉफ्टवर्ड) से लेखन कौशल के विकास में काफी सहायता मिल सकती है। इस कार्यक्रम में टूलस के रूप में हमें स्पेलिंग तथा ग्रामर (मात्राएँ तथा व्याकरण) चैक के रूप में ऐसे साधन प्राप्त होते हैं। जिनसे हम शब्द गठन में होने वाली वर्तनी तथा अक्षर विन्यास संबंधी त्रुटियों, शब्द एवं वाक्य विन्यास में होने वाली व्याकरण संबंधी त्रुटियों का निदान करने में सहायता मिलती है। पर्यायवाची शब्दों, अनेकार्थी शब्दों का ऐसा बहुमूल्य भंडार प्राप्त होता है जिनके द्वारा बच्चों को अपना शब्द भंडार विकसित करने में अमूल्य सहायता प्राप्त होती है।

इंटरनेट और हिन्दी शिक्षण : जहाँ कम्प्यूटर सहित इंटरनेट सुविधा उपलब्ध होती है, वहाँ भाषा शिक्षण अधिगम का कार्य काफी प्रभावशाली ढंग से संपन्न किया जा सकता है। इंटरनेट पर ऐसी बहुत सी साइटें उपलब्ध है जहाँ शिक्षकों को अपने भाषा संबंधी पाठों को पढ़ने-पढ़ाने के लिए विविध प्रकार की अनुदेशन संबंधी, सामग्री एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। पाठ योजना कैसे तैयार की जाए, किसी पाठ विशेष के लिए किस तरह की शिक्षण विधि और शिक्षण साधनों का प्रयोग किया जाए, विद्यार्थियों को अभ्यास कार्य तथा मूल्यांकन कार्य कैसे कराया जाए इत्यादि बातों का ज्ञान इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री के द्वारा अच्छी तरह से हो सकता है। किसी पाठ विशेष शिक्षण के लिए उसकी विषय वस्तु से संबंधित अतिरिक्त आवश्यक एवं उपयोगी जानकारी प्राप्त करने में इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री काफी सहायक सिद्ध हो सकती है। इंटरनेट पर किसी भी कवि, लेखक एवं उनकी रचनाओं से संबंधित जानकारी थोड़े प्रयास से ही आसानी से उपलब्ध हो जाती है। भाषा संबंधी इतिहास, शब्दकोष, विश्वकोष आदि की समुचित मात्रा में उपलब्धि आसानी से हो जाती है। इस उपलब्धता से केवल अध्यापक ही लाभान्वित नहीं होते बल्कि विद्यार्थियों को भी उनके

ISBN: 978-81-954645-0-0

स्वअधिगम में इंटरनेट पर उपलब्ध इस प्रकार की सामग्री काफी उपयोगी सिद्ध होती है। किसी भी साहित्यिक सहपाठ्य क्रिया जैसे कविता, पाठ प्रतियोगिता, भाषण या वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि में भाग लेने के लिए इसकी तैयारी करने में भी इंटरनेट पर उपलब्ध इस प्रकार की सामग्री विद्यार्थियों की बहुमूल्य सहायता करती है।

इंटरनेट द्वारा प्रदत्त ई-मेल सुविधा व वेबसाइटें :- इंटरनेट पर ऐसी वेबसाइटें भी उपलब्ध हैं जो उन्हें हमें भाषा संबंधी विभिन्न कौशलों का समुचित अभ्यास करने के लिए सुविधाएं प्रदान करती है। कुछ वेबसाइटें तो ऐसी भी हैं जो विद्यार्थियों को भाषा अधिगम संबंधी स्वमूल्यांकन तथा परीक्षाओं हेतु तैयारी करने से संबंधित सामग्री भी उपलब्ध कराती है। इंटरनेट प्रदत्त ई-मेल सुविधा विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को कही भी, किसी भी समय एक-दूसरे से जोड़ने में पर्याप्त रूप में सहायक सिद्ध होती है। इससे एक ओर जहाँ अध्यापक अपने साथी अध्यापकों तथा विषय विशेषज्ञों से दुनिया भर में कहीं भी किसी समय जुड़े रहकर एक-दूसरे से विचार-विनिमय कर उचित लाभ उठा सकते हैं वही वे अपने विद्यार्थियों से भी जुड़े रहकर उनके अधिगम कार्य में उनकी उचित सहायता कर सकते हैं वहीं वे अपने विद्यार्थियों से भी जुड़े रहकर उनके अधिगम कार्य में उनकी उचित सहायता कर सकते हैं । इसके द्वारा विद्यार्थियों को भी आपस में एक-दूसरे से अपने अधिगम हेतु आवश्यक अत: क्रिया करने में मदद मिलती है। अध्यापक ई-मेल व वेबसाइटों के माध्यम से अपने सभी विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा संबंधी उचित अभ्यास तथा प्रोजेक्ट कार्य प्रदान कर सकते हैं। विद्यार्थी प्रदत्त, वैयक्तिक तथा सामूहिक कार्यों को इंटरनेट के माध्यम से ठीक प्रकार पूरा करते हुए अध्यापकोंय को अपने किए हुए कार्य की फाइल भेज सकते हैं वे अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों से प्राप्त लिखित कार्य की उचित रूप से जांच कर, उन्हें आवश्यक परामर्श या प्रतिपुष्टि प्रदान की जा सकती है।

इस तरह ई-मेल व वेबसाइटें पारस्परिक विचार विनिमय संप्रेषण और आपसी संवाद का एक ऐसा लिखित साधन समझा जा सकता है जिससे भाषा शिक्षण और अधिगम के काय में बहुत ही उपयुक्त सहायता किसी भी समय किसी भी जगह बैठे हुये आसानी और शीघ्रता से उपलब्ध हो सकती है।

संदर्भ : इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा शिक्षण में कम्प्यूटर अध्यापक और विद्यार्थियों की सहायता करने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। जिन विद्यार्थियों और विद्यालयों के पास मल्टीमीडिया तथा कम्प्यूटर जन्म आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धि रहती है। उनके लिए तो भाषा शिक्षण अधिगम बहुत रोचक एवं प्रभावपूर्ण बन गया है। वैयक्तिक अध्ययन व भाषा के पढ़ने-पढ़ाने में कम्प्यूटर ने बहुत ही रोचकता, आकर्षण और प्रभावशीलता पैदा कर दी है। इंटरनेट की सुविधाओं ने तो आज सभी प्रकार से भाषा शिक्षण हेतु वे सभी शिक्षा संबंधी सामवती उपलब्ध कराने का साहस दिखलाया है जिससे सभी विद्यार्थियों को भाषा के अधिगम तथा कौशलों के विकास में सहायता मिल सके।

ISBN: 978-81-954645-0-0